भूमिका

भारतीय पृष्ठभूमि पर लोकगीतों की लंबी परंपरा रही है। देश की प्रत्येक भाषा और बोली मे लोकगीतों का गायन होता है। उसका गायन लोकाचारों, उत्सवों, ऋतुओं के अनुसार जनसामान्य द्वारा होता है। मनुष्य एक रागात्मक वृति का प्राणी है जिसके कारण वह लयात्मक गीतों का प्रयोग करता है। मनुष्य के करुणा और दुखों के कारण ही लोकगीत उत्पन्न होते हैं। उनके लोकगीतों में लयात्मकता के साथ-साथ जीवन की अभिव्यक्ति भी होती है। लोकगीत वास्तव में आत्मा के स्वर हैं। वह अपनी ही साधना एवं महिमा से गौरवान्वित होते हैं। ये वह बड़ी धारा है जिसमें अनेक छोटी-छोटी धाराओं ने मिलकर उसे सागर की तरह गम्भीर बना दिया है। मन की विभिन्न स्थितियों ने इनमें भावों के ताने-बाने बुने हैं। स्त्री-पुरुषों ने थककर इनकी शीतल छाँह में अपनी थकान मिटायी है। इनकी रसवन्ती ध्वनि में बालक सोये हैं। लोकगीतों का गायन विभिन्न रूपों में होता है। चाहे शहनाई में डुबे विवाह के गीत हों, करुणा में भीगे बेटी की बिदाई के गीत हों, उल्लास जगाते पर्व-त्योहारों के गीत हों, फागुन की मस्ती में ताल देते होली और चैती के गीत हों या रसीले कजरी के गीत हों। ये गीत सुनने वालों को सराबोर कर देते हैं तथा उल्लास का आभास देते हैं।

लोकगीतों में सहज मानव अनुभूतियों का साक्षात्कार होता है और इसमें अतीत व वर्तमान के सामाजिक प्रश्न विद्यमान रहते हैं, जो इतिहास में स्थान नहीं पा सके हैं लेकिन जन चित्त को आन्दोलित और ऊर्जस्वित करने की शक्ति रखते हैं। जिनकी विशेषताओं का निरूपण प्रभावोत्पादकता एवं उपादेयता आदि पर ध्यान जाना स्वाभाविक ही है।

भोजपुरी क्षेत्र में रहने के कारण लोकजीवन को मैंने करीब से देखा है। ग्रामीण परिवेश में समय के अनुकूल गूँजते कजरी गीत मेरे मन को भाव विभोर करते रहे हैं। साथ ही मेरे परिवार में भी कजरी गीतों का गायन समय-समय पर होता आया है और हो रहा है। इसलिए इनके प्रति मेरा रुझान स्वाभाविक है। बचपन से ही मेरे मन में कजरी गीतों के प्रति एक जिज्ञासा रही है। इसी के फलस्वरूप मैंने अपना शोध विषय **'हिंदी लोकगीतों में कजरी गीत का काव्य सौंदर्य'** का चयन किया है। इस शोध-प्रबंध को तीन अध्यायों मे विभक्त किया गया है।

पहला अध्याय **'कजरी गीत का परिचय'** को चार उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसमें कजरी गीत की उत्पत्ति, कजरी गीत के प्रकार, कजरी गीत का स्वरूप और कजरी गीत का महत्व को समझाया गया है।

दूसरा अध्याय **'कजरी गीत का भाव-पक्ष'** है। इस अध्याय को छ: उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला उप-अध्याय 'रस विवेचन' है, जिसमें कजरी में स्थित श्रृंगार, वियोग, करुण, वीर, शान्त और हास्य रस का वर्णन किया गया है। दूसरा उप-अध्याय 'प्रकृति चित्रण' है, जिसमें प्रकृति के सभी अंगों का वर्णन किया गया है। तीसरा उप-अध्याय 'सामाजिक चित्रण' है, जिसमें समाज में व्याप्त कुरुतियों का वर्णन किया गया है। चौथा उप-अध्याय 'आर्थिक चित्रण' है,जिसमें कजरी में स्थित लोकसमाज का आर्थिक चित्रण का वर्णन किया गया है। पांचवा उप-अध्याय 'ऐतिहासिक चित्रण' है, जिसमें कजरी में स्थित इतिहास का वर्णन किया गया है। छठवाँ उप-अध्याय 'सांस्कृतिक चित्रण' है ,जिसमें कजरी में व्याप्त संस्कृति का वर्णन किया गया है।

तीसरा अध्याय **'कजरी गीत का कला पक्ष'** है। इस अध्याय को चार उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। पहला उप-अध्याय 'विविध शैलियाँ' हैं, जिसमें कजरी के विभिन्न प्रकार के शैलियों का वर्णन किया गया है। दूसरा उप-अध्याय 'तुक (टेक) और लय' है, जिसमें कजरी के विभिन्न प्रकार के तुकों का वर्णन किया गया है और साथ ही कजरी के लय का भी वर्णन किया गया है। तीसरा उप-अध्याय 'भाषा' है, जिसमें कजरी में अन्य भाषा के प्रयुक्त शब्दों, सीखड़ ब्लाक का भाषा और सीखड़ ब्लाक में प्रयोग की जाने वाली विशिष्ट बोलियों का वर्णन किया गया है। चौथा उप-अध्याय 'अलंकार' है, जिसमें कजरी में प्रयुक्त विविध अलंकारों का विवेचन किया गया है।

निष्कर्ष में प्रस्तुत विषय का संक्षिप्त सार को प्रस्तुत किया गया है। अंत मे प्रस्तुत शोध को पूरा करने के लिए उपयोग में ली गई पुस्तकें, संकलित गीत तथा कोशों का विवरण संदर्भ सूची मे दिया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और वस्तुनिष्ठ शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसमें किसी भी प्रकार की पूर्वधारणा, अनावश्यक भावुकता, दुराग्रह एवं विषयवस्तु के उलझाव एवं भटकाव से बचने का प्रयास किया गया है।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए किसी न किसी का सहयोग तथा आवश्यकता होती है किसी के सहयोग के बिना कोई भी कार्य परिपूर्ण नहीं होता। सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक डॉ॰ बीर पाल सिंह यादव का सहृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे स्वतंत्र रूप से कार्य करने की आजादी दी तथा समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया।

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह का भी आभारी हूँ जिन्होंने शोध के दौरान महत्वपूर्ण परामर्श दिया। साथ ही विभाग के समस्त अध्यापकों एवं कर्मचारियों की प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

मैं पूज्यनीय माता-पिता एवं भाई-बहन का भी आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे अनुकूल वातावरण प्रदान करके इस योग्य बनाया जिसके कारण मैं इस शोध कार्य को पूर्ण कर सका। मैं अपने सहपाठी एवं सभी मित्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में विचार विमर्श करते रहे।

सुभाष चन्द्र